डॉ॰ सावित्री सिंह
संस्कृत विभाग
रा॰ म॰ अ॰ महाविद्यालय

समास प्रकरणम्

(1.) समसनं समासः → "विभक्ति रहित अनेक पदों के मेल को समास कहते हैं।"

(2.) एकपदीभावः समासः → विभक्ति रहित अनेक पदों का मिलकर एकपद हो जाना समास कहलाता है।

पदों को अलग-अलग करके रखना विग्रह कहलाता है। पदों को जोड़कर जो एक पद बनाया जाता है वह पद समस्त पद कहलाता है। पहले पद को पूर्वपद तथा अंतिम पद को उत्तर पद कहा जाता है।

जैसे – राष्ट्रस्य पतिः = राष्ट्रपतिः

यहाँ पर राष्ट्रस्य पतिः विग्रह है। राष्ट्रपतिः समस्त पद है। राष्ट्र पूर्व पद और पतिः उत्तर पद है। समास तत्पुरुष समास है।

निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार समास के निम्नलिखित भेद हैं –

1) अव्ययीभाव समास

पूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावः

जिस समास में पूर्व पद के अर्थ की प्रधानता होती है उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं।

अव्ययीभाव समास में ध्यान देने योग्य बातें

1. इस समास में पूर्वपद अव्यय तथा उत्तर पद प्रायः संज्ञा होता है।
2. समस्त पद नपुं॰ एकवचन अव्यय होता है।
3. उत्तर पद के अन्त में यदि दीर्घ स्वर हो तो समस्त पद होते समय वह दीर्घ स्वर ह्रस्व हो जाता है और अन्त में 'अम्' जोड़कर नपुं॰ एकवचन बना लिया जाता है। उत्तर

5. उत्तर पद के अन्त में यदि 'हल्' वर्ण हो तो समस्त पद होते समय 'अम्' जोड़कर नपुं॰ एकवचन बना लिया जाता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार निम्नलिखित अर्थों में अव्ययीभाव समास होता है :—

1) उप (समीप)

1) गृहस्य समीपम् / समीपे = उपगृहम्

उपगृहम् → Artificial अव्यय

2) वनस्य समीपम् = उपवनम्
3) द्वारस्य समीपम् = उपद्वारम्
4) गंगायाः समीपम् = उपगंगम्
5) यमुनायाः समीपम् = उपयमुनम्
6) गुरोः समीपम् = उपगुरु
7) नद्याः समीपम् = उपनदि
8) गोः समीपम् = उपगु

2) निर् - (अभाव)

1) मूलस्य अभावः = निर्मूलम्
2) जनानाम् अभावः = निर्जनम्
3) जलस्य अभावः = निर्जलम्
4) बलस्य अभावः = निर्बलम्
5) धनस्य अभावः = निर्धनम्
6) मक्षिकाणाम् अभावः = निर्मक्षिकम्

3) प्रति (से / को / तरफ)

1) दिनं दिनं प्रति = प्रतिदिनम्
दिनं दिनं प्रति = ,,
दिने दिने = ,,

क्रमशः →